कक्षा:-दसवीं

राजेंद्र बाबू

शब्दार्थ

गद्यात्मक = सादा, सामान्य	उपाधि = पदवी	निरन्न = बिना अन्न का
गंतव्य = जाने का स्थान	शीत अवकाश = सर्दियों की छुट्टियाँ	व्ययसाध्य = खर्चीला
गवाक्ष= सुराख, झरोखा	गरिमा = गौरव, महत्त्व	पारायण = व्रत की समाप्ति
झाँई = छाया, झलक, आभा	अस्त-व्यस्त = बिखराव	संयोग= इत्तिफ़ाक़, आकस्मिकता
विलास= सुखोपभोग, मौज-मस्ती	अंक भरना = आलिंगन में लेना, गले लगाना	सूप = अनाज साफ करने का पात्र, छाज
विहंगम दृष्टि = पूरा-पूरा देखना; एक सरसरी निगाह	सूत्र धारिणी = संचालन करने वाली	अपराजेय = अभिजीत, जिसे पराजित न किया जा सके
शिलान्यास = नींव का पत्थर रखना	संवेदना = सहानुभूति, दु:ख को महसूस करने की भावना	प्राप्य = पाने योग्य, जो मिलना चाहिए।
कर्मनिष्ठा = कर्म के प्रति समर्पण	आतिथेय = मेज़बान, अतिथि का स्वागत करने वाला	सहधर्मिणी = गृहस्थ धर्म में साथ देने वाली, धर्मपत्नी
आतिथ्य मेहमान नवाज़ी	प्रसाधित करना = सजाना-संवारना	परिधान = वस्त्र
भृकुटि = भौंह	अजातशत्रु = जिसका कोई शत्रु न हो	उपवास = व्रत
संभ्रांत = कुलीन, अभिजात	अपवाद = सामान्य नियम से भिन्न	एकासन = बैठने की एक ही मुद्रा
सिरकी = सींक		

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. **राजेन्द्र बाबू को लेखिका ने प्रथम बार कहाँ देखा था?**

उत्तर - राजेन्द्र बाबू को प्रथम बार लेखिका ने पटना स्टेशन पर देखा था।

प्रश्न 2. **राजेन्द्र बाबू अपने स्वभाव और रहन-सहन में किसका प्रतिनिधित्व करते थे?**

उत्तर - राजेन्द्र बाबू अपने स्वभाव और रहन-सहन में एक सामान्य भारतीय कृषक का प्रतिनिधित्व करते थे।

प्रश्न 3. **राजेन्द्र बाबू के निजी सचिव और सहचर कौन थे?**

उत्तर -राजेन्द्र बाबू के निजी सचिव और सहचर भाई चक्रधर थे।

प्रश्न 4.**राजेन्द्र बाबू ने किनकी शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए लेखिका से अनुरोध किया?**

उत्तर - राजेन्द्र बाबू ने अपनी पोतियों की शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए लेखिका से अनुरोध किया।

प्रश्न 5. **लेखिका प्रयाग से कौन-सा उपहार लेकर राष्ट्रपति भवन पहुँची थी?**

उत्तर- लेखिका प्रयाग से सिरकी के बने एक दर्जन सूप लेकर राष्ट्रपति भवन पहुँची थी।

प्रश्न 6. **राष्ट्रपति को उपवास समाप्ति पर क्या खाते देखकर लेखिका को हैरानी हुई?**

उत्तर - राष्ट्रपति को उपवास की समाप्ति पर उबले आलू खाते देखकर लेखिका को हैरानी हुई।

II . निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. **राजेन्द्र बाबू को देखकर हर किसी को यह क्यों लगता था कि उन्हें पहले कहीं देखा है?**

उत्तर - राजेन्द्र बाबू की मुखाकृति ही नहीं, उनके शरीर के संपूर्ण गठन में एक सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया थी, अतः उन्हें देखने वाले को कोई न कोई आकृति या व्यक्ति स्मरण हो आता था और हर किसी को लगता था कि उन्हें पहले भी कहीं देखा है।

प्रश्न 2. **पं. जवाहरलाल नेहरू की अस्त-व्यस्तता तथा राजेंद्र बाबू की सारी व्यवस्था किस का पर्याय थी**?

उत्तर- पं. जवाहरलाल नेहरू जी की अस्त-व्यस्तता भी व्यवस्था से निर्मित होती थी, किंतु राजेन्द्र बाबू की सारी व्यवस्था ही अस्त-व्यस्तता का पर्याय थी। दूसरे यदि जवाहरलाल जी की अस्त व्यवस्तता को देख लें तो उन्हें बुरा नहीं लगता था, परंतु अपनी अस्त-व्यस्तता के प्रकट होने पर राजेन्द्र बाबू भूल करने वाले बालक के समान संकुचित हो जाते थे।

प्रश्न 3. **राजेंद्र बाबू की वेशभूषा के साथ उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण लेखिका को क्यों हो आया**?

उत्तर- लेखिका को राजेंद्र बाबू की वेशभूषा के साथ उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण हो आया क्योंकि चक्रधर बाबू ने वर्षों राजेंद्र बाबू के पुराने परिधान से अपने-आपको प्रसाधित कर कृतार्थता का अनुभव किया था। राजेंद्र बाबू के मोज़ों में से जब पाँचों उँगलियाँ बाहर निकलने लगतीं, जब जूते के तले पैर के तलवों के वृक्ष बना लेते, जब धोती, कुरते, कोट आदि का खद्दर अपने मूल ताने बाने में बदलने लगता, तब चक्रधर इस पुरातन सज्जा को अपने लिए सहेज लेते।

प्रश्न 4. **लेखिका ने राजेन्द्र बाबू की पत्नी को सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री क्यों कहा है**?

उत्तर - राजेन्द्र बाबू की पत्नी साध्वी, सरल, क्षमामयी, सबके प्रति ममतालु और असंख्य संबंधों की सूत्रधारिणी थी। ससुराल में उन्होंने बालिका वधू रूप में पदार्पण किया था। बिहार के

ज़मींदार परिवार की वधू और स्वातंत्र्य युद्ध के अपराजेय सेनानी की पत्नी होने का उन्हें कभी अहंकार न हुआ। इसलिए लेखिका के उन्हें सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री कहा है।

प्रश्न 5. **राजेन्द्र बाबू की पोतियों का छात्रावास में रहन-सहन कैसा था?**

उत्तर- राजेन्द्र बाबू की पोतियों का छात्रावास में रहन-सहन साधारण था । वे खादी के कपड़े पहनती थीं जिन्हें वे स्वयं ही धोती थीं । उनके साबुन, तेल आदि का व्यय भी सीमित था | कमरे की सफाई, झाड़ पोंछ, गुरुजनों की सेवा आदि भी उनके अध्ययन के आवश्यक अंग थे।

प्रश्न 6. **राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेन्द्र बाबू और उनकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ - उदाहरण देकर स्पष्ट करें।**

उत्तर - राजेन्द्र बाबू जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने तो महादेवी वर्मा ने उनसे उनकी पौत्रियों के संबंध में बात की। राजेन्द्र बाबू ने उन्हें कहा कि राष्ट्रपति भवन उनका नहीं है। अहंकार से उनकी पौत्रियों का दिमाग खराब न हो जाए इसलिए वे जैसे पहले रहती थीं, उसी प्रकार आगे रहेंगी । राजेन्द्र बाबू की पत्नी भी राष्ट्रपति भवन में स्वयं भोजन बनाकर सामान्य भारतीय गृहिणी के समान पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के उपरांत स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं। इस से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेन्द्र बाबू और उनकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिये-

प्रश्न 1 **राजेंद्र बाबू की शारीरिक बनावट, वेशभूषा और स्वभाव का वर्णन करें।**

उत्तर - महादेवी वर्मा द्वारा राजेंद्र बाबू की शारीरिक बनावट, वेशभूषा और स्वभाव का वर्णन इस प्रकार किया है:

शारीरिक बनावट - राजेन्द्र बाबू के शरीर का गठन एक सामान्य भारतीय के समान ही था। काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखें, मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी ठुड्डी, कुछ मोटे पर सुडौल होंठ, श्यामल झाँई देता हुआ गेहुआँ वर्ण, ग्रामीणों जैसी बड़ी-बड़ी मूंछे जो ऊपर के होंठ पर ही नहीं नीचे के होंठ पर भी रोमिल बालों का आवरण डाले हुए थीं । हाथ, पैर, शरीर सबमें लम्बाई की ऐसी विशेषता थी, जो दृष्टि को अनायास आकर्षित कर लेती थी।

वेशभूषा- उनकी वेशभूषा अस्त - व्यस्त होती थी । वह खादी की मोटी धोती ऐसा फंटा देकर बांधते थे कि एक ओर दाहिनी पैर पर घुटना छूती थी दूसरी ओर बाएँ पैर की पिंडली मोटे खुरदुरे, काले बन्द गले के कोट के ऊपर का भाग बटन टूट जाने के कारण खुला रहता । पैरों में मोज़े जूते होते और गांधी टोपी पहनते।

स्वभाव- राजेंद्र बाबू स्वभाव और रहन सहन में सामान्य भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे । देश के राष्ट्रपति होने के बावजूद भी वे बिल्कुल साधारण जीवन व्यतीत करते थे।

प्रश्न 2. पाठ के आधार पर राजेन्द्र बाबू की पत्नी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर - महादेवी वर्मा के अनुसार राजेंद्र बाबू की पत्नी धरती की पुत्री थी। उनके चरित्र की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालते महादेवी वर्मा उन्हें साध्वी, सरल, क्षमामयी, सबके प्रति ममतालु और असंख्य संबंधों की सूत्रधारिणी कहती हैं।

ममतालु - वह जब अपने पोतियों को मिलने छात्रावास में भी सभी बालिकाओं तथा नौकरों का समान रूप से ध्यान करती और छात्रावास कुछ घण्टे आने पर भी वह सबको बुला बुलाकर उनका हाल पूछती ।

विनम्र - बिहार के ज़मींदार परिवार की वधू और स्वतंत्रता सेनानी की पत्नी होने का उन्होंने कभी गर्व नहीं किया । वह बहुत ही विनम्र थी, इसलिए वह नौकरों तक में भेदभाव

नहीं करती थी और सब को बुलाकर उनका हालचाल पूछती थी। राष्ट्रपति की पत्नी होने का उन्हें तनिक भी अहंकार नहीं था।

सरल - वह कुशल और सरल हृदय महिला थी । राष्ट्रपति भवन में रहने के बावजूद भी रसोई का सारा काम वह स्वयं करती थी और उसमें पूर्णता कुशल थी । राजेन्द्र बाबू की ही भाँति वह भी एक साधारण जीवन व्यतीत करती थी। राष्ट्रपति भवन में रहने और राष्ट्रपति की पत्नी होने के बावजूद भी वह अपना व्रत उबले हुए आलू खाकर पूर्ण कर लेती थी। वह सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री थी।

प्रश्न 3. आशय स्पष्ट कीजिये-

(क) सत्य में जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना घटाना संभव नहीं है ।

लेखिका महादेवी वर्मा ने सच्चे व्यक्तित्व की तुलना सत्य के साथ करते हुए बताया है कि जिस प्रकार आप सच में कुछ भी जमा या घटा नहीं सकते, सच अपने आप में ही परिपूर्ण होता है इसी प्रकार सच्चे व्यक्तित्व वाले में भी कुछ कम या अधिक करने की आवश्यकता नहीं होती । सच्चा व्यक्तित्व पवित्र और सौम्य होता है ।

(ख) क्या वह साँचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे ।

महादेवी वर्मा आज के नेताओं के आचरण और व्यवहार पर चिंता व्यक्त करते हुए कहती है कि क्या ईश्वर के पास से क्या वह साँचा टूट गया है? जिस साँचे में ढालकर उन्होंने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जैसे उच्च - व्यक्तित्व वाले चरित्रों का निर्माण किया था । आजकल के नेताओं में राजेंद्र बाबू जैसी मधुरता, निश्छलता सभ्यता व सरलता क्यों नहीं दिखाई देती?

(ख) भाषा - बोध

निम्नलिखित में संधि कीजिए-

शीत + अवकाश = शीतावकाश

मुख + आकृति = मुखाकृति

प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

विद्या+अर्थी = विद्यार्थी

छात्र + आवास = छात्रावास

प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष

निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए-

राजेन्द्र = राजा + इन्द्र

फलाहार = फल + आहार

मिष्ठान्न =मिष्ठ+अन्न

व्यवस्था = वि+ अवस्था

वातावरण = वात + आवरण

व्यतीत = वि + अतीत

प्रत्येक = प्रति + एक

एकासन = एक + आसन

निम्नलिखित विग्रह पदों को समस्त पद में बदलिए-

राष्ट्र का पति = राष्ट्रपति

रसोई के लिए घर = रसोईघर

कर्म में निष्ठा = कर्मनिष्ठा

गंगा में स्नान = गंगास्नान

विद्या का पीठ = विद्यापीठ

राष्ट्रपति का भवन = राष्ट्रपति भवन

IV. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए:

गाँव का रहने वाला	=	ग्रामीण
नगर का रहने वाला	=	नागरिक
कृषि करने वाला	=	कृषक
छात्रों के रहने का स्थान	=	छात्रावास
जिसका कोई शत्रु न हो	=	अजातशत्रु
जिसे पराजित न किया जा सके	=	अपराजिता
अतिथि का स्वागत करने वाला	=	आतिथेय

शिक्षा विभाग, पंजाब

(मार्गदर्शक:- **डॉ. सुनील बहल**, असिस्टेंट डायरेक्टर एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब)

तैयार कर्ता:- राजन शर्मा, जालंधर व सुमन सहगल, जालंधर **शोधक:-** राजन, अमृतसर